

वन ओशन समिति

प्रलिमिंस के लिये:

वन ओशन समिति, संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक, विश्व महासागर दविस, महासागरों का दशक, जलवायु परिवर्तन।

मेन्स के लिये:

संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण और गरिवट, सरकारी नीतियाँ और हस्तक्षेप, महासागरों का महत्त्व, महासागरों के संरक्षण हेतु उठाए गए कदम।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में प्रधानमंत्री ने वन ओशन समिति के उच्च-स्तरीय सत्र को संबोधित किया।

- वन ओशन समिति का आयोजन फ्रांस द्वारा **संयुक्त राष्ट्र** और **विश्व बैंक** के सहयोग से फ्रांस के ब्रेस्ट में किया गया।
- इस शिखर सम्मेलन के उच्च स्तरीय सत्र को जर्मनी, यूनाइटेड किंगडम, दक्षिण कोरिया, जापान, कनाडा सहित कई देशों के राष्ट्राध्यक्षों व शासनाध्यक्षों ने संबोधित किया।

महासागरों का महत्त्व:

- महासागर हमारे ग्रह की सतह के 70% से अधिक भाग पर मौजूद हैं फिर भी अक्सर यह देखा जाता है कि प्रमुख यूरोपीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के दौरान इनके बारे में कोई चर्चा नहीं की जाती है।
- महासागर प्रमुख पर्यावरणीय संतुलनों (विशेष रूप से जलवायु) के नियामक, संसाधनों के प्रदाता, व्यापार को सहज बनाने वाले महत्त्वपूर्ण घटक और देशों तथा मानव समुदायों के बीच की एक आवश्यक कड़ी हैं।
- हालाँकि विभिन्न प्रकार के दबावों जैसे- जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, प्रदूषण या समुद्री संसाधनों के अत्यधिक दोहन के चलते इनके सामने भी गंभीर खतरे की स्थिति उत्पन्न हो गई है।
- अंतरराष्ट्रीय समुदाय को संगठित करने और समुद्र पर ऐसे दबावों को कम करने के लिये टोस कार्रवाई के प्रयास में फ्रांस ने महासागरों को समर्पित 'वन प्लेनेट समिति' आयोजित करने का निर्णय लिया है।



‘वन ओशन समिटि’ का लक्ष्य:

- वन ओशन समिटि का लक्ष्य **समुद्रिक मुद्दों पर अंतरराष्ट्रीय समुदाय की महत्वाकांक्षा के सामूहिक स्तर को ऊपर उठाना** है।
 - सम्मेलन के दौरान अवैध रूप से मछली पकड़ने, शपिगि को डकिारबोनाइज़ करने और **प्लास्टिक परदूषण** को कम करने की दशा में प्रतबिद्धता व्यक्त की गई।
 - उच्च समुद्रों के शासन में सुधार करने और अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक अनुसंधान के समन्वय के पर्यासों पर भी ध्यान केंद्रति कथिा गया।

शखिर सम्मेलन में भारत का रुख:

- भारत हमेशा से एक समुद्री सभ्यता रही है। भारत के प्राचीन ग्रंथ और साहित्य समुद्री जीवन समेत महासागरों द्वारा प्रदत्त उपहारों का वर्णन करते हैं।
- भारत की सुरक्षा और समृद्धि महासागरों से जुडी हुई है। "भारत-प्रशांत महासागर पहल" (Indo-Pacific Oceans Initiative) में समुद्री संसाधनों को एक प्रमुख स्तंभ के रूप में शामिल कथिा गया है।
- सम्मेलन के दौरान भारत ने फ्रांस की पहल 'राष्ट्रीय कषेत्राधिकार से परे जैव विविधता पर उच्च महत्वाकांक्षा गठबंधन' (High Ambition Coalition on Biodiversity Beyond National Jurisdiction) का समर्थन कथिा।
- भारत **एकल उपयोग प्लास्टिक (सगिल यूज़ प्लास्टिक)** को समाप्त करने के लथि प्रतबिद्ध है।
 - इसी प्रतबिद्धता को पूरा करते हुए भारत के **तीन लाख युवाओं ने लगभग 13 टन प्लास्टिक कचरा एकत्र कथिा** है।
- भारत ने **एकल उपयोग प्लास्टिक पर एक वैश्विक पहल** शुरू करने के लथि फ्रांस का समर्थन कथिा तथा इस पहल से जुड़ने के संकेत दथि।
 - हाल ही में पर्यावरण, वन और जलवायु परविरतन मंत्रालय ने **प्लास्टिक अपशषिट परबंधन संशोधन नथिम, 2021** को अधसूचित कथिा है। यह नथिम सगिल यूज़ प्लास्टिक से नरिमति उन वशिषिट वस्तुओं को प्रतबिंधति करता है जनिकी वर्ष 2022 तक 'उपयोगति कम और अपशषिट कषमता बहुत अधिक' है।
 - भारत सरकार द्वारा देश की नौसेना को इस साल समुद्र से प्लास्टिक कचरे को साफ करने के लथि **100 जहाज़-दविस का योगदान करने का भी नरिदेश दथिा** है।

महासागरों की सुरक्षा हेतु अन्य वैश्विक पहल:

- **संयुक्त राष्ट्र महासागर सम्मेलन:** वर्ष 2017 में संयुक्त राष्ट्र के महासागर सम्मेलन ने महासागरों, समुद्रों और समुद्री संसाधनों के संरक्षण व सतत् उपयोग के लथि कार्रवाई करने की मांग की।
 - अगला सम्मेलन वर्ष 2022 में आयोजति कथिा जाएगा।
- **सतत् विकास के लथि महासागर वजिज्ञान का एक दशक:** समुद्र के स्तर में गरिावट के चकर को उलटने के पर्यासों का समर्थन करने और दुनथिा भर में महासागर हतिधारकों को एक सामान्य ढाँचा प्रदान करने हेतु सतत् विकास (2021-2030) के महासागर वजिज्ञान के एक दशक की घोषणा की गई है जो यह सुनिश्चित करेगा कि महासागर वजिज्ञान महासागर के सतत् विकास के लथि बेहतर परस्थितियों को बनाने में देशों का पूरी तरह से समर्थन कर सकता है।
- **वश्व महासागर दविस:** प्रतविरष 8 जून को **वशिव महासागर दविस** मनाया जाता है जो हमारे रोजमर्रा के जीवन में महासागरों की भूमिका के प्रतति जागरूकता फैलाने और महासागर की रक्षा करने तथा समुद्री संसाधनों का सतत् उपयोग करने हेतु प्रेरक कार्रवाई के लथि संयुक्त राष्ट्र दविस है।
- **भारत-नॉर्वे महासागर वारता:** वर्ष 2019 में भारत और नॉर्वे की सरकारों ने एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर कर भारत-नॉर्वे महासागर वारता की स्थापना की और महासागरों पर अधिक नकिटता से कार्य करने पर सहमति जताई।
- **इंडो-पैसफिक ओशन इनशिरिटवि (IPOI):** यह देशों के लथि एक खुली गैर-संधि आधारति पहल है जो इस कषेत्र में आम चुनौतियों के सहकारी और सहयोगी समाधान हेतु मलिकर कार्य करती है।
 - IPOI सात स्तंभों- समुद्री सुरक्षा, समुद्री पारस्थितिकी, समुद्री संसाधन, कषमता नरिमाण और संसाधन साझा करना, आपदा ज़ोखमि न्यूनीकरण एवं परबंधन वजिज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा शैक्षणिक सहयोग व व्यापार संपर्क एवं समुद्री परविहन पर ध्यान केंद्रति करने के लथि मौजूदा कषेत्रीय वास्तुकला और तंत्र पर आधारति है।
- **ग्लोलटिर पार्टनरशपि प्रोजेकट:** इसे **अंतरराष्ट्रीय समुद्री संगठन (IMO)** और यूएन (FAO) के **खाद्य और कृषि संगठन** ने शुरू कथिा है तथा यह नॉर्वे सरकार द्वारा प्रारंभिक रूप से वतितपोषति है। इसका उद्देश्य शपिगि और मत्स्य पालन से समुद्री प्लास्टिक कूड़े के उत्पादन को रोकना और कम करना है।

स्रोत: पी.आई.बी.